दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

(Hindi Literature)

टेस्ट–6

(द्वितीय प्रश्न-पत्र)

DTVF / OPT-23 **HL-2306**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time Allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक : 250 *Maximum Marks* : 250

नाम (Name): Karmveer Narwadia

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 27 july 2023

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2023]:

0	8	5	2	6	7	2

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ______ टिप्पणी (Remarks): ______

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - क

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: **10 × 5 = 50**

(क) दिनकर की कविता 'उर्वशी' का प्रतिपाद्य

दिनकर ओज प्रधान कवि थें। इन्होंनें राष्ट्रवाद तथा वीर रस प्रधान काव्य रचना कर्म किया। इसी के अतिरिक्त दिनकर ने 'उर्वशी' तथा 'पुरूरवा' के व्याख्यान कों नए अर्थ से जोड़ है।

उर्वशी में पुरूरवा 'धरती पुत्र' कें रूप में पैदा हुए हैं। उनके मन मे देवता की तृष्णा भावना देखी जा सकती है। वही उर्वशी देवलोक की सहज नारी है जो निश्चित भाव से पृथ्वी का सुख भोगना चाहती है।

इन दोनों कें प्रेम की सुन्दरता का कथानक बनकर आता हैं, इसकें साथ-साथ अनेक जीवन दर्शन की छोटी-छोटी धाराएँ भी आकर मिल जाती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इन्ही प्रेम की छवियों का सुन्दर मनोवैज्ञानिक दृश्यमान उर्वशी में धरातल पर प्रस्तुत हुआ है।

दिनकर की उर्वशी की शिल्प की बात करें तो दिनकर हमेशा से प्रत्यक्षता व सादगीपूर्ण भाषा के समर्थक रहे हैं लेकिन यहाँ अलंकृति तथा अभिजात्यता की माँग के अनुसार भाषा प्रयोग में आई है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) इप्टा का परिचय और महत्त्व

नाटक न केवल पाठ्य विधा है, साथ ही रंगमंचीयता भी महत्वपूर्ण है। रंगमंचीयता के समर्थन के लिए अनेक संस्थाओं का निर्माण हुआ जैसे- नेशनल स्कूल ड्रामा, इण्डियन पीपुल थियेटर एसोसियन (इप्टा) इत्यादि।

इप्टा की स्थापना ब्रिटिश औपनिवेशिक भारत में हुई। जिसका प्रमुख उद्देश्य था लोगों को सामाजिक- सांस्कृतिक रूप से जागरूक बनाना।

इप्टा ने प्रारम्भ में ही बंगाल में अकाल प्रभावित गाँवों तथा उनके लोगों का मंचनीयता से भारतीय जनता तथा ब्रिटिश शासन को आवश्यक कदम के लिए अभिप्रेरित किया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इप्टा की शाखाएँ बंगाल तथा असम में भी खोली गई। बाद में ये थियेटर समस्त जनता को आकर्षित करते नजर आए।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) संस्मरण 'स्मृति की रेखाएँ'

'संस्मरण' साहित्य की वह विधा है जिसमें लेखक एक विशिष्ट ~~व्यक्ति~~ यात्रा को अपनी यादों से सहेजता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) अज्ञेय की कहानियों का शिल्प

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अज्ञेय आधुनिक कहानीकार हैं, वें संवेदना तथा शिल्प के प्रति जागरूक थे वे तों संवेदना से भी महत्वपूर्ण शिल्प को मानते थें।

अज्ञेय मनोवैज्ञानिक कहानीकार हैं, यह विचार फ्रॉयड़ के मनोविश्लेषणवाद से प्रभावित है जिसमें पात्रों के अन्तर्मन के द्वन्द्व को उद्घाटित किया जाता हैं इसें अभिव्यक्ति के लिए शिल्प जागरूक होना आवश्यक हो जाता हैं।

अज्ञेय ने अपनी कहानियों त्रिपथगा, जयदोल, पठार धीरज में शिल्प की महत्वपूर्णता को साबित किया हैं, वे कहते हैं.

" शिल्प का महत्व संस्कृति के महत्व के समतुल्य हैं।"

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

इसके साथ ही अज्ञेय ने "मेजर चौधरी की उदाती" भी दिखती है जो तुलनात्मक शिल्प का महत्व कम दिखाती है।

अज्ञेय की शिल्प संबधी विशेषताएँ मार्क्सवादियों के विपरीत हैं, मार्क्सवादी कंटेन्ट को ज्यादा महत्व देते है ना कि रूप को।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) क्या भक्तिकाव्य को लोकजागरण का काव्य कहना उचित है? सुचिंतित विचार प्रस्तुत कीजिये। 20

मध्यकाल में वैदिक धर्मकाण्डो से पीडित जनता त्रस्त थी, समाज में तरह-तरह की सामाजिक-आर्थिक समस्याएँ पीडित थी। तब इनका सामना भक्ति काल के कवियों से हुआ। इन कवियों ने इनका सामना दो टुक जवाब देकर किया।

(अ) सामाजिक समस्याओं के प्रति

समाज में फैल रहे वर्ग भेद तथा जाति भेदभाव की समस्या को चुनौती कबीर साहित्य तथा तुलसी साहित्य में दिखता है -

जो तू बामन- बमनी का जाया (कबीर)
आन- बान त क्यूँ नहीं आया।

विप्र निराचर ~~लोलुप कामी~~ लोलुप कामी
छठ निरासर वृषल स्वामी (तुलसी)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ii) महिलाओं के प्रति -

हालांकि प्रारम्भ मे कहीं-कहीं नारी के प्रति त्याज्य भावना रही है, लेकिन अन्त तक आते-आते कबीर तथा तुलसी ने नारी भावनाओं का सुन्दर वर्णन किया है. साथ ही जायसी ने नागमती विरह का वर्णन किया है जिसकी प्रशंसा खुद जायसी ने की है।

प्रारम्भ मे

(कबीर) " नारी की झांई पड़त, अंधा होत भुजंग
कबीरा तिनका कौन गति जो नित नारी के संग।

(तुलसी) " ढोल गंवार क्षुद्र पशु नारी

बाद में

(कबीर) एक पतिव्रत नारी, काली कुरूप कुंवारि
× × × × × × ×

(तुलसी) सम्मलित पति-पत्नी, सफल परमगति के अधिकारी

(iii) सतगुरु का महत्व

गुरु का महत्व भक्तिकाल मे महत्वपूर्ण है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सतगुरु हमसूं रीझकर, कह्यो एक परसंग
बरसयों बादल प्रेम को, भीज गयो सब अंग।

गुरु सुआ जेहि पंथ दिखावै, तत् निगुर
त्रिगुण को पावै।

(iv) सगुण की निर्गुण के ऊपर विजय तथा समन्वयवाद

सगुण की विजय सूरदास के भ्रमरगीत में वही तुलसी के यहाँ समन्वयवाद दिखता है।

लादि खेप गुण-ज्ञान जोग की
ब्रज में आन उतारि। (सूर)
अगुणहि, सगुणहि नहिं कछु भेदा। (तुलसी)

(v) आडम्बरों का विरोध

कांकर पाथर जोड़ि के, मस्जिद लई बनाय.
ताब उपर मुल्ला बाँग दे. का बहरा होय खुदाय

(vi) प्रेम के महत्व की स्थापना।

जायसी के यहाँ प्रेम तत्व की विशद उपस्थिति दिखती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रेम पहार दुनि विधि गद।
सौं पै चढ़ सीस सों चढ़।

इसके साथ ही अनेक लोकजागरण के पक्ष दिखते हैं। जैसे- माया का विनाश, महिला पक्ष के प्रति जागरूकता, आर्थिक समस्याओं के प्रति जागरूकता, सामाजिक समस्याओं में जमीनी विवाद तथा प्रकृति का समावेशन इत्यादि।

लोकजागरण का काव्य जनता की चित्तवृत्तियों को जागरूक करता है और तत्कालीन समस्याओं को आज भी प्रासंगिक कर देता है। आज भी ये समस्याएँ विश्व के सामने मौजूद हैं। अतः भक्ति काल का साहित्य मध्यकाल से लोक-जागरण का प्रतीक रहा है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) पृथ्वीराजरासो के महाकाव्यत्व पर विचार कीजिये। 15

पृथ्वीराज रासो चन्दरबरदाईकृत काव्य रचना है, जिसके महाकाव्यत्व का प्रश्न लगातार समीक्षकों के प्रति विवाद का मुख्य बिन्दु रहा है।

नगेन्द्र द्वारा प्रतिपादित नए महाकाव्यत्व प्रतिमानों के आधार पर पृथ्वीराजरासो का मूल्यांकन किया जाना चाहिए-

* <u>उदात्त कथानक</u>

पृथ्वीराज द्वारा संयोगिता को अपने पसन्द अनुसार विवाह में चुनने का अधिकार देना तथा लगातार मुहम्मद गौरी को युद्ध में हरा देना इस कथानक को उदात्त बनाते हैं।

* <u>उदात्त चरित्र</u>-

पृथ्वीराज एक उदात्त चरित्र है। वस्तुतः आज के युग में एक पत्नी होते हुए दूसरी पत्नी की

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कामना उदात्त नहीं हो सकती. लेकिन तत्कालीन समाज में राजाओं में बहुपत्नी प्रथा व्याप्त थी, साथ ही लगातार बाहरी शासकों से प्रजा का संरक्षण इसे उदात्त बनाता है।

उदात्त भाव

वीररस प्रधान है. जिसमें पृथ्वीराज लगातार युद्ध कर रहा है। साथ ही इसमें कहीं-कहीं श्रृंगार रस की सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है। जैसे- पृथ्वीराज - संयोगिता संयोग में। अतः भाव दृष्टि से भी उदात्त ही है।

उदात्त उद्देश्य

आज की दृष्टि से पृथ्वीराज का उद्देश्य उदात्त सिद्ध नहीं होता है लेकिन तत्कालीनता के नजरिये से यह उदात्ततापूर्ण दिखता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उदात्त शैली

रासो साहित्य के महत्वपूर्ण काव्यों में से एक है. जिसमें रासक साहित्य की वीररस प्रधान, ओजस्वितापूर्ण भाषा है। भाषा शैली व अलंकारिक तथा बिम्बात्मकपूर्ण उदात्त शैली के कारण अतुलनीय है।

लेकिन समस्या पृथ्वीराज के सवंद्ध निर्वाह के कारण पैदा होती है। यहाँ कहीं-कहीं चंद, कहीं-कहीं शुक-शुकी तथा संयोगिता-पृथ्वी राज अनुरूप कथानक बुना जाता है।

लेकिन फिर भी पृथ्वीराज रासो हिन्दी साहित्य का पहला चरित्रप्रधान महाकाव्य है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिन्दी साहित्येतिहास-लेखन परंपरा में 'शिवसिंह सरोज' की सीमाओं एवं महत्त्व पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

साहित्येतिहास में लेखक वर्ग रचनाकार तथा रचनाओं को काल-क्रम के अनुसार व्यवस्थित करते हैं। इसी प्रयास में हिन्दी साहित्य मे दो प्रकार से साहित्येतिहास लिखा गया है।

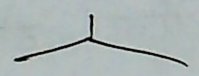

औपचारिक	अनौपचारिक
→ शुक्ल जी	- भक्त माल
→ हजारी प्रसाद द्विवेदी	- मिश्र बंधु
→ शिव सिंह सरोज	- ~~शिव सिंह सरोज~~

प्रारम्भिक अनौपचारिक लेखन में इतिहास को काल-क्रम अनुसार नहीं लिखा जाता था, बल्कि अव्यवस्थित लिखा जाता था।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

औपचारिक लेखन में शिवसिंह सेंगर की 'शिवसिंह सरोज' महत्वपूर्ण है। इसमें लगभग 100 ~~कवियों~~ कविताओं का रचनाकाल बताया गया है। यह काल वर्णक्रम के अनुसार व्यवस्थित किया है।

महत्व

* औपचारिक लेखन मे महत्वपूर्ण प्रयास।
* आगामी साहित्येतिहासकारो के लिए स्रोत।
  जैसे- मिश्र बंधुओं द्वारा 'शिवसिंह सरोज' की मदद ली गई है।
* वर्णक्रम व्यवस्थित का नया प्रयास।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

सीमाएँ

(I) अध्ययन के अनुरूप व्यवस्थित नहीं।

(II) वर्गीकरण वर्णक्रम अनुसार था अतः कालक्रम अनुसार अध्ययन संभव नहीं था।

(III) विभिन्न क्षेत्रीय कविताओं का समावेशन, जो इसे अप्रासंगिक ठहराता है।

अतः हम कह सकते हैं शिवसिंह सरोज एक ठोस प्रयास तो नहीं था लेकिन भागामी साहित्येतिहासकारों के लिए जरूर ठोस स्रोत उभर कर आया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) हिंदी के 'समस्या नाटक' पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: **10 × 5 = 50**

(क) नई कहानी की सीमाएँ

1956 में भैरव प्रसाद गुप्त 'नयी कहानी' के सम्पादन से हिन्दी कविता साहित्य का पंचमशील चरण माना जाता है। नयी कविता की मुख्य विशेषताएँ निम्न हैं-

(I) जीवन के यथार्थ को महत्व।
(II) शहरी मध्यवर्गीय जीवन केन्द्र में।
(III) पात्र आंतरिक संघर्ष में।
(IV) अकेलापन, अजनबीपन कथानक।

इसके साथ ही इसकी सीमाएँ भी नजर आती हैं-

(I) ये कविताएँ सिर्फ समस्याओं को व्यक्त करती हैं, इनका समाधान करने का प्रयास नहीं करती हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ii) यौन चेतना तक सीमित

नयी कहानियों का कथानक यौन चेतना की प्रबलता को व्यक्त करता है। जिसको आधुनिक समाज के लिए स्वीकार्य नहीं है।

उदा. धर्मवीर भारती की कहानियाँ।

(iii) शहरी मध्यमवर्ग तक सीमित।

(iv) अन्तर्द्वंद्व का समाधान नहीं।

(v) पीड़ित व्यक्ति को ज्यादा मोहग्रस्त बना देना।

(vi) सामान्य पाठकों के लिए अबूझ पहेली।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) दिनकर की कविता में ओज

दिनकर मार्क्सवादी कवि है. अतः वे अपनी रचना का उद्देश्य क्रांति की चेतना निर्वाह के लिए करते है जिसके लिए ओज गुण महत्वपूर्ण हो जाता है।

दिनकर अपनी कविता रश्मिरथी मे कर्ण के वीरत्व के गुण को ओजता के साथ व्यक्त करते है। साथ ही वे जनता को ओजस्विता के लिए आवहान करते है-

बरसों पड़ी मिट्टी पुनबुना उठी
मिट्टी सोने का ताज पहन इठलाती है.
दो राह समय का धर्घर नाद सुनो,
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।

इसके साथ ही वे उर्वशी तथा कुरुक्षेत्र मे भी ओज गुण की प्रधानता

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दिखाते है-

युधिष्ठर! स्वत्व की अन्वेषणा पातक नहीं है।

× × × × × × ×

नरक, उनकें लिए जो पाप ~~करते~~ कमाते है
ना कि उनकें लिए जो निर्भय होकर लड़ते है

साथ ही दिनकर तो विज्ञान संबंधी उपयोग जो प्रकृति के लिए कल्याणकारी नहीं है, उनका भी तिरस्कार करते है।
यहाँ भी ओज पूर्ण अनुभूति होती है-

सावधान मनुष्य! यदि विज्ञान है तलवार
~~यदि विज्ञान~~
तो फेंक दे तो इसे तज मोह स्मृति के पार

अतः हम कह सकते है दिनकर ओज गुर्ण प्रधान महाकाव्य की रचना करते है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'परख' उपन्यास की 'कट्टो'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जैनेन्द्र मनोविश्लेषणवादी उपन्यासकार है। उपन्यास विधा मे इन्होने परख, सुनीता, कल्याणी इत्यादि का रचना कार्य किया।

मनोविश्लेषणवादी उपन्यासों में घटनाएँ कम होती है, पात्रों कें अन्तर्मन के द्वन्द्व से कथानक बुना जाता है।

परख उपन्यास में सत्यधन एक गरीब युवक है जो बच्चों को पढ़ाकर अपना खर्चा चलाता है, वही कट्टो (विधवा) पहले यहाँ पढ़ने आती है, फिर उससे प्रेम कर लेती है। वहीं दूसरी तरफ गरिमा तथा बिहारी बहन-भाई है कट्टो सत्यधन को चाहती है लेकिन शादी बिहारी से होजाती है, वह सत्यधन की तरह बिहारी मे

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

वह सब कुछ पाती है। सत्यबचन दूसरी तरफ खुश नहीं रह पाता है। वह अब भी कट्टों को चाहता है।

कट्टों के माध्यम से जैनेंद्र ने प्रेम तत्व को नारी पात्रों के माध्यम से दिखाया है कि कैसे नारी प्रेम के सामने समर्पण कर देती है।

इसी तरह के प्रयास भीष्म साहनी, प्रेमचंद ने भी साहित्य मे किए, जो सराहनीय है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) विद्यापति की सौंदर्य-चेतना

विद्यापति आदिकाल के रचनाकार थे, इन्होंने दरबारी काल में रहकर कीर्ति लता, कीर्ति पताका इत्यादि रचनाओं की रचना की।

दरबारी रचनाओं में विद्यापति ने कृष्ण-राधा के रूप मे प्रतीक रूप मे राजा-रानी को लिखा। रानी की सुन्दरता को राधा के समतुल्य बताया।

विद्यापति के इस सौन्दर्य चेतना के प्रभाव: शुक्ल जी जैसे ~~कवि~~ आलोचक इन्हें पूर्णत: श्रृंगारिक पद बताते है तो कुछ भक्ति पद। अनेक मत सामने आए है।

विद्यापति की सौन्दर्य चेतना

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

चरम रूप उनकी राधा में दिखता है जो हिन्दी साहित्य का एक जीवन्त पात्र है।

इस तरह राधा के जीवन सौन्दर्य का प्रकाश धर्मवीर भारती ने भी किया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) हिंदी रंगमंच की विकास-यात्रा में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय का योगदान।

नाट्य विधा सिर्फ पाठ्य विधा नहीं है, भारतेन्दु जैसे नाटककार इसे अनिवार्यतः रंगमंच से जोड़ते हैं। इसी क्रम में 1960 में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय का गठन हुआ।

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय ने देश में जगह-जगह अपने प्रदर्शनी, पिपोट कला को प्रोत्साहन देकर लोगों को जागरूक किया। साथ ही सांस्कृतिकता का संरक्षण किया।

आज राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की पहुँच बॉलीवुड तक पहुँच गई है जिसमें ओमपुरी, नवाजुद्दीन सिद्दकी, अनुपम खेर इत्यादि का उल्लेखनीय योगदान है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

रंगमंच का विकास नाटक युग में धीरे-धीरे हुआ, जहाँ भारतेन्दु काल में ये अलग-अलग नहीं थे लेकिन जयशंकर प्रसाद जैसे नाटककार नाटक के लिए रंगमंच की माँग कर रहे थे। बाद में जगदीश चंद्र माथुर, रामकुमार वर्मा ने रंगमंच को वापिस नाटक से जोड़ा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) 'समानान्तर' कहानी-आन्दोलन का परिचय देते हुए हिन्दी कहानी को उसका अवदान बताइए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) हिंदी साहित्येतिहास-लेखन में आचार्य रामचंद्र शुक्ल की सीमाओं का विवेचन कीजिये। 20

हिन्दी साहित्येतिहास के शुक्ल जी ने "नागरी प्रचारिणी सभा" के लिए "हिन्दी की शब्द सागर भूमिका" में लिखी।

शुक्ल जी साहित्येतिहास मे निम्न का अनुपालन किया।

→ प्रत्यक्षवाद/विधेयवादी → कारणों के आधार पर व्याख्या।

→ जीवनी के स्थान पर रचनाओं का मूल्यांकन।

→ रस की आधुनिकवादी व्याख्या।

→ भक्तिकाल, रीतिकाल तथा आधुनिक काल को विभाजित।

→ "साहित्य चित्तवृत्तियों का प्रतिबिम्ब"।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सीमाएँ

→ शुक्ल जी की प्रत्ययवादी व्याख्या के कारण परम्परा का महत्व को व्यक्त नहीं कर सके और कबीर की अक्खड़ता की व्याख्या नहीं कर पाए। यह प्रयास द्विवेदी जी ने किया और बताया कि यह अक्खड़ता कबीर जी को योग मार्ग की साधना पद्धति के कारण मिली।

— युगीन परिस्थितियों के कारण साहित्य की व्याख्या के कारण इस्लाम की उपस्थिति को भक्तिकाल के उद्भव का कारण माना जो विजयदेवनारायण साही, द्विवेदी जी ने सही किया।

→ सिद्ध-नाथ साहित्य को साहित्य से बाहर कर दिया, उनको सिर्फ साम्प्रदायिक शुष्क प्रचार बताया। जबकि द्विवेदी जी ने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उनके रचनाकर्म को सिद्ध किया।

— शुक्ल जी प्रबंध काव्य के समर्थक थे, अतः साहित्येतिहास में मुक्तकों को शामिल नहीं किया। साथ ही छायावादी जैसे प्रतीकात्मक काव्य को नकार दिया।

— शुक्ल जी अपने समकालीन साहित्य का मूल्यांकन ठीक नहीं किया। जैसे- प्रेमचंद, प्रसाद इत्यादि। जिनका मूल्यांकन बाद के समीक्षकों रामविलास शर्मा, नामवर सिंह जैसे समीक्षकों ने किया।

→ भक्तिकाल के अलावा रीतिकाव्य तथा नीति काव्य को साहित्येतिहास में शामिल नहीं किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

\$ रीतिकाल का नामकरण वीरगाथा काल रखना भी साहित्येतिहास में सीमाएँ दिखाते हैं।

यह कहना उचित होगा कि शुक्ल जी के समक्ष उपस्थित तथ्यों तथा संग्रहों की कमी थी जिसका प्रभाव साहित्येतिहास पर पड़ा। अन्यथा वहाँ एक ऐसा इतिहास लिखा जिसके आगे वाले साहित्येतिहासकार उन्हीं पर निर्भर रह गए।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'आधे-अधूरे' नाटक की संवेदना पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मोहन राकेश आधुनिक नाटकार थे, उन्होंने अपने नाटक स्थानकों में स्त्री-पुरुष संबंधों में खोखलापन, अस्तित्ववादी विचारधारा इत्यादि का समावेशन किया।

मोहन राकेश के नाटक

- आषाढ़ का एक दिन
- आधे-अधूरे
- पैरों-तले जमीन

आधे-अधूरे नाटक में दो पात्र हैं- महेंद्रनाथ तथा सावित्री। दोनों एक-दूसरे से संतुष्ट नहीं हैं। इस कारण सावित्री अनेक आदमियों से मिलती है लेकिन वह कहीं भी पूर्णता नहीं पाती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कुछ ऐसी ही हालात महेन्द्रनाथ की है।

कुल मिलाकर यह नाटक दाम्पत्य जीवन के खोखलापन, पारिवारिक जीवन के विघटन, संबधों के बिखराव का है।

इसमें नंद के विपरीत महेन्द्रनाथ सावित्री के पास दुबारा आ जाता है। जीवन दुबारा शुरु करता है।

यह पारिवारिक जीवन का विघटन तत्कालीन समाज की समस्या है, जहाँ नारी संगठित होकर आर्थिक अधिकारो के लिए बाहर निकली थी। यह रूढ़िवादी मनुष्यों के लिए शोभनीय नहीं था। इसी क्रम मे विघटन शुरु हुआ।

शिल्प मे विचार को तो बस

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

नाटक मे एक ही पात्र से 4 पात्रो की अभिव्यक्ति करवाना एक महत्वपूर्ण कार्य था। साथ ही रंगमंचीयता के प्रयास किए गए है।

यह कहना उचित होगा कि आधे- अधूरे नाटक की प्रासंगिकता आज भी समाज में व्यापकता से मौजूद है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिंदी की आंचलिक उपन्यासधारा पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी साहित्य में 'फणीश्वरनाथ रेणु' के मौलिकता से नई धारा का विकास हुआ- आंचलिक उपन्यासों की धारा। इस तरह की रचनाएँ मारिया एजवर्द तथा फामस में भी दिखता है।

आंचलिक उपन्यासधारा की विशेषताएँ

(I) अंचल समग्रत्व नायक के रूप में।
(II) अंचल की सामाजिक- आर्थिक स्थितियों का यथार्थपूर्ण आंदोलन।
(III) आंचलिक भाषा शैली का प्रयोग
(IV) चरित्रों की संख्या बहुतायत में होती है।
(V) किसी उद्देश्य या विचारधारा का

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रतिपादन नहीं होता है।

(VI) प्रकृति का वर्णन गहराई से होता है।
(VII) अंचल के सांस्कृतिक साहित्य का समावेशन होता है।

देशज शैली/ भाषा को प्रोत्साहन
↑
स्वाधीनता के प्राप्त व्यक्तित्व / अंचलत्व को महत्व ← आंचलिक उपन्यास : क्यों? → बढ़ता शहरीकरण के कारण, ग्रामीण जनता का अंचल के प्रति प्यार।
↓
भारत के ऐसे अंचल हर गाँव का प्रतिनिधित्व।

हिन्दी के आंचलिक उपन्यास

(I) फणीश्वरनाथ रेणु- मैला आँचल, पल्टू बाबू रोड
(II) रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ
(III) मासूम रजा → आधा गाँव
(IV) नागार्जुन → बलचनमा

Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न सख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इसके साथ ही आंचलिक उपन्यासों की कुछ सीमाएँ भी है-

(1) देशज भाषा के प्रयोग के कारण बाहरी व्यक्तियों के लिए समझना कठिन है।

(ii) अंचल के नायकत्व का यथार्थ वर्णन बिना विचारधारा के ओपना होना मुश्किल है हालांकि ऐसे प्रयास हुए है।

(iii) अंचल उपन्यासों का पाठक वर्ग सीमित होता है।

यह कहना उचित होगा कि आंचलिक वर्गों के उपन्यास सम्पूर्ण अंचल के नायकत्व का उद्घाटन करते है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न सख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) 'अंधेर नगरी' नाटक की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिये। 20

भारतेन्दु आधुनिक नाटककार थे वे नाटक का उद्देश्य सामान्य जनता को नवजागरण हेतु मानते थे। अतः वे रंगमंचीय नाटक लिखते जो तत्कालीन समस्याओं को दिखाती थी। ध्यान से देखे तो ये समस्याएँ बदले कलेवर मे आज भी प्रासंगिक ठहरती है।

अंधेर नगरी में महंत अपने दो शिष्यों गोवर्धनदास तथा नारायणदास को शिक्षा- दीक्षा देकर शहर भेजता है, गोवर्धन दास को शहर पहली दृष्टि से ही सुखकर लगता है और जब वह पकड़ा जाता है और फांसी का ~~हुक्म~~ हुक्म होता है। जब व्यवस्था दिखती है-

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सर्वप्रथम नौकरशाही की भ्रष्टाचारी में लिप्तता, विद्वेषपूर्ण कार्य, योजनाओं का क्रियान्वन न करना इत्यादि समस्याएँ है -

चना - हाकिम सब जो खाते,
सब पर दूना टिकस लगाते।

यह समस्या आज भी प्रासंगिक है, अनुच्छेद 312 के अन्तर्गत नौकरशाही ज्यादा ही सुरक्षित है और भ्रष्टाचार, अभिजात्यता के उदाहरण रोज दिखते है।

भारतेन्दु ने भौतिकवादी संस्कृति का उल्लेख किया है जहाँ पैसा ही केन्द्रीय सत्ता के रूप में उभरा है।

टके सिर भाजी
टके सिर खाजा।

यह समस्या भी आज प्रासंगिक है,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

एरिक फ्रॉम जैसे दार्शनिकों ने यह माँग उठायी है। भौतिकवादी भोगवादी बन चुके है।

अंधेरनगरी मे न्याय व्यवस्था के कुचक्र मे गरीबी, मजबूर, ~~किर~~ व्यक्ति फंस जाता है तो निरपराध भी अपराधी बन जाता है। लगभग इसी तरह भारत मे आज भी जेल में लगभग 76% कैदी ट्रायल में चल रहे है।

इसके साथ ही अंधेर नगरी मे राज्य व्यवस्था का जो प्रशासन तथा कार्यप्रणाली दिखाई है, वह उस समय ब्रिटिश कार्यप्रणाली को दिखाती है और आज भी संसद को दिखाती है, जहाँ लगभग 30% सांसदों पर मुकदमें दर्ज है और योग्यता में भी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कमी है।

इसी के साथ अन्य धर्म का चित्रण भी साम्प्रदायिकता का कारण जो आज भी प्रासंगिक ठहराता है, व्यापारियों की समस्याओं का वर्णन आज भी जिन्दा है

इस तरह 'अंधेर नगरी' की जीवतंता का महत्व न केवल आज प्रासंगिक है, आने वाले युगों-युगों तक बना रहेगा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'जनवादी कहानी' का परिचय दीजिये। 15

"New story movement" में अनेक आंदोलनों का समावेशन हुआ। जैसे- नयी कहानी, समानांतर, जनवादी कहानियाँ।

जनवादिक कहानियों के दो चरण दिखते हैं- एक तो आपातकाल से पूर्व, दूसरा आपातकाल के बाद।

आपातकाल से पूर्व (1967-75),

आजादी के बाद की समस्याओं से त्रस्त जनता को क्रांति की चेतना के लिए ये ~~कविताएँ~~ कहानियाँ लिखी जा रही थी, जिसमें लोगों को संगठित होने, मार्क्सवादी मूल्यों को अपनाने पर जोर दिया गया।

अतः सामाजिक- आर्थिक शोषण से

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कुछ ये कहानियाँ साहित्य मे प्रमुखता से स्थान रखती है।

जैसे- प्रदीप मॉड्व, मार्कण्डेय की कहानियाँ।

आपातकाल के बाद क्रांति चेतना का सपना मिट्टी मे मिल चुका था, अब ये कहानियाँ सरकार को जनकल्याणकारी माँगों के लिए आवान उठायी जाने वालों में शामिल होने लगी। साथ ही इन कहानियों में पंजाब समस्या, विद्वेष तथा समसामयिक समस्याओं का चित्रण किया गया है।

अतः हम कह सकते है जिस प्रकार कविता मे नागार्जुन लिखते है.

कागद की आजादी मिलती
ले लो दो-दो आने में

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

साथ ही दुष्यंत सिंह ने जनवादी कविता में लिखा है-

हो गई पीर पर्वत सी पिघलनी चाहिए
× × × × × ××

अतः जनवादी कविताओं ने जनता को आकर्षित किया और साहित्य का प्रचार-प्रसार हुआ।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) महादेवी वर्मा की वेदनानुभूति पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

छायावादी साहित्य भावनाओं से संपृक्त काव्य था। इसमें सभी रचनाकार वैयक्तिकता का सुन्दर चिन्तन कर रहें थे।

उसमें महादेवी वर्मा जो लगभग बीस साल उम्र में पति कें देहान्त कें बाद सामाजिक बन्धनों के कारण वेदनानुभूति करती है।

मिलन का नाम मत लों.
मैं विरह में चीर हूँ।

छायावादी कवि "महादेवी वर्मा के अनुसार " छायावादी कवि अपनी हर साँस का इतिहास लिखना चाहता है अतः इस क्रम में वे सामाजिक स्वतंत्रता कें प्रयास में उचित निर्माण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

का निर्माण नहीं कर पाए।

वेदनानुभूति का दूसरा कारण था उस समय समाज की सामाजिकता व्यक्तिवाद पर हावी थी। इस व्यक्तिवाद की आहु-पोह नें वेदना में डाल दिया। महादेवी वर्मा लिखती है-

प्राणों को जलाकर
रोज बनाती रही मैं दिवाली।

महादेवी वर्मा द्वारा अनेक प्रयास के बावजूद वे व्यक्तिवाद को स्थापित नही कर पायी। साथ ही छायावादी कवियों पर शुक्ल जी की टिप्पणी भी उन्हें वेदनानुभूति में परिवर्तित कर देती है।

यह वेदनानुभूति ना केवल महादेवी वर्मा मे दिखती है बल्कि छायावादी निराला, प्रसाद में भी दिखती है-

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

दुख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूँ जो आज नहीं कही।

अतः 'वेदनाभूति' महादेवी वर्मा की वैयक्तिकता को समावेशित करने के कारण उत्पन्न हुई है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Feedback

Questions .....

Model Answer & Answer Structure .....

Evaluation .....

Staff .....

Copyright – Drishti The Vision Foundation

रफ कार्य के लिये स्थान
(Space for Rough Work)

Copyright – Drishti The Vision Foundation